कोरापुट की खेती को हेरिटेज प्रणाली का दर्जा

ज्योतिका सूद

भारतीय कृषि इन दिनों आधुनिक तकनीकों के साथ ताल मिलाने के लिए संघर्ष कर रही है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य व कृषि संगठन (एफएओ) ने भारत की पारंपरिक कृषि प्रणाली को एक तोहफा दिया है। एफएओ ने ओडिशा के कोरापुट क्षेत्र में प्रचलित पारंपरिक कृषि प्रणाली को वैश्विक रूप से महत्त्वपूर्ण कृषि हेरिटेज प्रणाली (जीआईएएचएस) घोषित किया है।

इसकी घोषणा गत जनवरी माह में भुवनेश्वर में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने की। भारतीय पारंपरिक कृषि की कोरापुट प्रणाली देश की ऐसी पहली कृषि प्रणाली है, जिसे टिकाऊ व समतामूलक विकास और खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता, स्वदेशी ज्ञान व सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने में उसके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया है। यह सम्मान चेन्नई स्थित एमएस स्वामीनाथन अनुसंधान फाउंडेशन (एमएसएसआरएफ) द्वारा इस प्रणाली के संरक्षण के लिए प्रस्तुत एक प्रस्ताव के आधार पर मिला।

यह प्रस्ताव कहता है कि ओडिशा का कोरापुट क्षेत्र, जहां की 70 फीसदी से अधिक आबादी आदिवासी है, वैश्विक संदर्भ में आनुवंशिक खज़ाने के मामले में बेहद अहम है। कम-से-कम 79 आवृतबीजी (एंजियोस्पर्म) और एक नग्नबीजी (जिम्नोस्पर्म) प्रजाति सिर्फ यहीं पाई जाती हैं। इतनी आनुवंशिक संपन्नता के बावजूद ऐसी कोई पहल नहीं की गई कि इस विरासत का इस्तेमाल क्षेत्र की गरीबी मिटाने के लिए किया जा सके। फाउंडेशन के प्रस्ताव के अनुसार वह जन केंद्रित, प्रकृति उन्मुख और गरीबों व महिलाओं के हितार्थ ऐसी प्रणाली विकसित करना चाहता है, जिससे क्षेत्र की समृद्धि के द्वार खुल सकें।

कोरापुट पूर्वी घाट में स्थित ऊंचे पठारों वाला ऐसा क्षेत्र है, जहां पहाड़ और टीलों की बहुतायत है। यहां के आदिवासियों के पास स्वदेशी ज्ञान का भंडार है जिससे वे विभिन्न तरह की पारंपरिक खेती करते हैं। उदाहरण के लिए वे बुवाई से पहले बोए जाने वाले बीज की क्षमता का परीक्षण अपने पारंपरिक ज्ञान के आधार पर कर लेते हैं, मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखते हैं और चावल व अन्य फसलों की स्थानीय प्रजातियों को सुरक्षित रखते हैं। यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता रहता है।

कोरापुट में जयपोर का इलाका औषधीय पौधों के आनुवंशिक संसाधनों से संपन्न है। यहां 1200 से भी अधिक औषधीय पौधे पाए जाते हैं, जिनका इस्तेमाल हड्डियों के फ्रेक्चर, मलेरिया, आंत या पेट में जलन और अन्य बीमारियों के इलाज में किया जाता है। जयपोर चावल की अनेक प्रजातियों का भी उद्गम स्थल है। यहां के किसानों ने चावल की सैकड़ों प्रजातियों का संरक्षण किया है। इनकी कृषि प्रणाली का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यहां के पवित्र

अन्य जीआईएएचएस प्रोजेक्ट्स

- एंडियन एग्रीकल्चर (पेरु)
- चिलो खेती (चिली)
- इफ्यूगाओ राइस टेरेस (फिलीपींस)
- ओऐसिस ऑफ द मगरीब (अल्जीरिया, ट्यूनिशिया)
- राइस-फिश एग्रीकल्चर (चीन)
- हनी राइस टेरेस सिस्टम (चीन)
- वैनियन ट्रेडिशनल राइस कल्चर सिस्टम (चीन)
- मसाई पैस्टोरल सिस्टम (कीन्या, तंज़ानिया)
- नोटो, सैटोयामा, सैटोयूमी (जापान)
- सैडो, सैटोयामा (जापान)
- कोरापुट क्षेत्र (ओडिशा, भारत)

भारत से प्रस्तावित अन्य क्षेत्र

- सोपिना बेट्टास सिस्टम (प. घाट)
- कैटामारन मत्स्यपालन (तमिलनाडु)
- लद्दाख की पारंपरिक खेती
- सिक्किम-हिमालयी कृषि (सिक्किम)
- थार रेगिस्तान के राइका चरवाहे (राजस्थान)
- कोरानगाडु सिल्वो-चारागाह प्रबंधन प्रणाली (तमिलनाडु)

उपवनों का संरक्षण है। ये उपवन पौधों के आनुवंशिक संसाधनों को संरक्षित रखते हैं। ये उपवन जैविक विरासत तो हैं ही, साथ ही ऐसी सामाजिक व्यवस्था भी बनाते हैं जिनमें वहां के आदिवासी वृक्षों को देवताओं के रूप में पूजते हैं। इसके ज़रिए जंगलों को बचाना संभव हो सका है।

फाउंडेशन ने जैव संरक्षण परियोजनाएं पहले से ही हाथ में ले रखी हैं, जिनमें सामुदायिक जैव रजिस्टर के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण भी शामिल है। इन रजिस्टर्स के रख-रखाव का काम अब सामुदायिक जैव विविधता संरक्षण दल द्वारा किया जाता है। यह दल प्राथमिक संरक्षक समुदायों के सदस्यों में से ही चुना गया है। फाउंडेशन आदिवासी किसानों को उनकी कृषि जैव विविधता पर बौद्धिक संपदा अधिकार दिलाने में मदद करने के लिए भी कई तरह की पहल कर रहा है। इस परियोजना के तहत फाउंडेशन एक जिनेटिक हेरिटेज पार्क स्थापित करने का भी इरादा रखता है।

बॉटेनिकल सर्वे ऑफ इंडिया और नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जिनेटिक रिसोर्सेस द्वारा करवाए गए अध्ययनों के अनुसार कोरापुट क्षेत्र में फूलों की समृद्ध विविधता है। यहां आवृतबीजी व नग्नबीजी वनस्पतियों और फर्न की करीब 2500 प्रजातियां पाई जाती हैं। इस क्षेत्र में धान की 340 किस्में, मोटे अनाज की 8, दलहन की 9, तिलहन की 5, रेशा वनस्पतियों की 3 और सब्ज़ियों की 7 प्रजातियां दर्ज की गई हैं।

ज़रा यह भी देख लें कि वैश्विक रूप से महत्त्वपूर्ण कृषि हेरिटेज प्रणाली (जीआईएएचएस) से आशय क्या है।

जीआईएएचएस नामक इस पहल की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र के खाद्य व कृषि संगठन ने वर्ष 2002 में की थी। इसका मकसद दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कृषि जैव विविधता ज्ञान प्रणालियों, खाद्य एवं आजीविका सुरक्षा और संस्कृति को मान्यता देना और उनका संरक्षण व प्रबंधन करना है। परियोजना का उद्देश्य दुनिया भर में ऐसी 100 से 150 कृषि हेरिटेज प्रणालियों को मान्यता देना है ताकि पारंपरिक ज्ञान के वास्ते उनका संरक्षण और प्रबंधन किया जा सके। इस पहल के तहत शामिल हैं:

• किसानों की खाद्य सुरक्षा और बेहतरी सुनिश्चित करते हुए उन प्रणालियों और जैव विविधता को पोषित करना जिनका उन्होंने ही विकास किया है।

• जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान का मौके पर संरक्षण करते हुए सरकार की संरक्षण नीतियों और उपायों का समर्थन करना।

• स्थानीय समुदायों और देशज लोगों के भोजन के अधिकार और सांस्कृतिक विविधता व उपलब्धियों को मान्यता देना।

• ऐसे तरीके विकसित करना जिनमें जिनेटिक संसाधनों का मौके पर संरक्षण सम्बंधित पारंपरिक ज्ञान व प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन की स्थानीय संस्थाओं के साथ किया जा सके ताकि एक सतत बदलते भौतिक व सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण के साथ तालमेल बनाया जा सके और कृषि प्रणाली को सामाजिक-पर्यावरणीय दृष्टि से लचीला बनाया जा सके और सहविकास संतुलन स्थापित किया जा सके। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 91 का हल

ना			वै	श्वि	क	त	प	न
इ	ल्ली		द्य				रि	
ट्रो				कु	पो	ष	ण	
ज	ल	स्ने	ही		ख		ति	
न			लि	व	र			क्ष
	अ		य		न	व	जा	त
	प	रा	म	र्श				वि
	स्मा				भो		प	क्ष
पा	र	स	प	त्थ	र			त